

अष्टमः पाठः

सूवितस्तबक:

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै: । न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा: ॥।।।

पुस्तके पठित: पाठ: जीवने नैव साधित:। किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न सार्थक: ।।2।।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तव:। तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥३॥

गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि। अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥४॥

काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: को भेद: पिककाकयो:। वसन्तसमये प्राप्ते काक: काक: पिक: पिक: 11511

शब्दार्थाः

उद्यमेन

- परिश्रम से

by hard work

मनोरथै:

- मन की इच्छा से

desire/only by desiring

सिंह:

– शेर

lion

मृगाः

- हिरण/पश्

deers/animals

दरिद्रता

- दीनता/कृपणता

poverty

प्रियवाक्यप्रदानेन - प्रिय वचन बोलने से

by using sweet words

तुष्यन्ति

- सन्तुष्ट/प्रसन्न होते हैं

get satisfied

मानवाः

मनुष्य

human beings

तस्मात्

इसलिये

therefore

वक्तव्यम्

बोलना चाहिए

should be spoken

वचने

बोलने में

in speaking

साधित:

उपयोग किया

used

भवेत्

होगा/होना चाहिए

should be

सार्थकः – अर्थपूर्ण/प्रयोजन युक्त meaningful

काकः – कौआ crow

कृष्ण: – काला black

पिक: - कोयल cuckoo

पिककाकयोः – कोयल और कौए में between

cuckoo and crow

प्राप्ते – आने पर after getting

गच्छन् – जाता हुआ while going

पिपीलकः – नर चींटी ant (he)

याति – जाता है goes

योजनानाम् – 4 कोसों का a measure of distance

(लगभग 12 कि.मी.) equal to 12 kms.

शतानि – सौ hundreds

अगच्छन् – न चलते हुए without movement

वैनतेयः – गरुड् garuda



1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।

2. श्लोकांशान् योजयत-

ah

तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं गच्छन् पिपीलको याति प्रियवाक्यप्रदानेन किं भवेत् तेन पाठेन काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: ख

सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः। जीवने यो न सार्थकः। को भेदः पिककाकयोः। योजनानां शतान्यपि। वचने का दरिद्रता।

| _ | | | |
|----|---------------------------------------|-----------|--------|
| 2 | प्रश्नानाम् | उस्राााा | ालावन- |
| J. | בוויוויץא. | 2(1/11/21 | 101911 |
| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | |

- (क) सर्वे जन्तवः केन तुष्यन्ति?
- (ख) पिककाकयो: भेद: कदा भवति?
- (ग) कः गच्छन् योजनानां शतान्यपि याति?
- (घ) अस्माभि: किं वक्तव्यम्?

4. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं-'न' इति लिखत-

| (क) | काकः कृष्णः न भवति। | |
|------------------|--------------------------------|--|
| (폡) | अस्माभि: प्रियं वक्तव्यम्। | |
| (ग) | वसन्तसमये पिककाकयोः भेदः भवति। | |
| (ঘ) | वैनतेयः पशुः अस्ति। | |
| (ड) | वचने दरिद्रता न कर्त्तव्या। | |



5. मञ्जूषातः समानार्थकानि पदानि चित्वा लिखत-

| ग्रन्थे | कोकिल: | गरुड: | परिश्रमेण | कथने |
|---------|---------|-------|------------|------|
| | वचने | | ****** | •••• |
| | वैनतेय: | | ******** | |
| | पुस्तके | | ********** | |
| | उद्यमेन | | ******* | **** |
| | पिक: | | ****** | •••• |

6. विलोमपदानि योजयत-

| क | ख | |
|----------|----------|----|
| सार्थक: | आगच्छ | ति |
| कृष्ण: | श्वेत: | |
| अनुक्तम् | सुप्तस्य | |
| गच्छति | उक्तम् | |
| जागृतस्य | निरर्थक: | • |